PG HN S4-05(DSE)

TWO YEAR MASTER'S DEGREE COURSE

(CBCS and Accordance with NEP 2020)

SEMESTER-IV

लोक-संस्कृति (उत्तर-पूर्व के विशेष संदर्भ में)

Padmanath Gohainbaruah School of Humanities

KRISHNA KANTA HANDIQUI STATE OPEN UNIVERSITY

विषय विशेषज्ञ

प्रोफ़ेसर दिलीप कुमार मेधी, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम

प्रोफ़ेसर अमूल्य बर्मन, हिंदी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय (सेवानिवृत विभागाध्यक्ष)

प्रोफ़ेसर भूषण पाठक, अध्यक्ष, बी.एस.कॉलेज, हाउली, बरपेटा

पाठ्यक्रम समन्वयक : डॉ. उज्जवल डेका बरुवा, सहायक प्राध्यापक**,** कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय**,** असम

एसएलएम् तैयारी टीम

इकाइयाँ	योगदानकर्ताओं के नाम
1	डॉ. उज्जवल डेका बरुवा, सहायक प्राध्यापक**,** कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय**,** असम,
2**,** 3**,** 4	डॉ टिंकू छेत्री, सहायक प्राध्यापिका, कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय**,** असम
5, 15	डॉ. दिनेश साहू,सहायक प्राध्यापक**,** सिक्किम विश्वविद्यालय,
6,7	डॉ. सुरभि चुतिया, सहायक प्राध्यापिका, कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय**,** असम
8	डॉ. भायोलिना डेका, अतिथि प्राध्यापिका,, हेंडिक महिला महाविद्यालय
9, 10, 11	डॉ प्रांजल कुमार नाथ, सहायक प्राध्यापक, कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय,
12	डॉ. चान्दम इडो सिंह, सहायक प्राध्यापक, मणिपुर विश्वविद्यालय
13	डॉ. अनुज कुमार, सहायक प्राध्यापक, नागालैंड विश्वविद्यालय
14	प्रो. मिलनरानी जमातिया, प्रोफेसर, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

Editors

Content: डॉ. टिंकू छेत्री, सहायक प्राध्यापिका,, कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय**,** असम

Language: डॉ.गोमा देवी शर्मा**,** सहायक प्राध्यापिका, तेजपुर विश्वविद्यालय**,** डॉ. बी आकाश राव, सहायक प्राध्यापक, सूर्य सेन महाविद्यालय, पश्चिम बंगाल

Structure & Format : डॉ. सुरभि चुतिया, सहायक प्राध्यापिका**,** कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय**,** असम

July, 2026

This Self Learning Material (SLM) of the Krishna Kanta Handiqui State Open University is made available under a Creative Commons Attribution-Non Commercial-Share Alike 4.0 License (international) http://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/

ISBN: xxxxxxxxxxxxxxxx

Printed and published by Registrar on behalf of the Krishna Kanta Handiqui State Open University.

Headquarters: Patgaon, Rani Gate, Guwahati - 781 017

City Campus: NH 37, Resham Nagar, Khanapara, Guwahati - 781 006; www.kkhsou.in

अनुक्रमणिका

इकाई 1: लोक-संस्कृति : अर्थ एवं परिभाषा **11 - 41**
लोक-संस्कृति का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

इकाई 2: लोक और संस्कृति : अवधारणा **42 - 56**
लोक और लोक-संस्कृति से तात्पर्य एवं अवधारणा

इकाई 3: समाज जीवन में लोक-संस्कृति का महत्व **57 - 73**
महत्व, अवधारणा और इसकी आवश्यकताएँ

इकाई 4: लोक-संस्कृति का अध्ययन, परंपरा एवं विस्तार **74 - 88**
प्राचीन काल से अब तक

इकाई 5: लोक-मानस और लोक-संस्कृति की अभिव्यक्ति **89-104**
संस्कार तथा धर्म की दृष्टि से, त्योहारों की दृष्टि से, कृषि अथवा श्रम-परिहार की दृष्टि से, विश्वास की दृष्टि से, रस की दृष्टि से

इकाई 6: लोकवार्ता की अवधारणा एवं स्वरूप(लोकसंस्कृति के सन्दर्भ में) **105 - 116**
लोकवार्ता का स्वरूप, क्षेत्र और महत्व, लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य का अंतःसम्बन्ध, लोक वार्ता और लोक साहित्य, लोक वार्ता के तत्व, लोक साहित्य और संस्कृति

इकाई 7: लोक-संस्कृति के विभिन्न रूप **117 - 133**
लोक-संस्कृति से जुड़े अभिन्न अंगों तथा स्वरूपों पर चर्चा

इकाई 8: असमिया लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय **134 - 162**
संस्कृति की परिभाषा, संस्कृतियों के प्रकार, लोक संस्कृति का वर्गीकरण, असम की लोक-सांस्कृतिक परिचय, असम में लोक संस्कृति का हालिया सन्दर्भ

इकाई 9: अरुणाचली लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय **163 - 174**
जनजातीय स्थिति, लोकविश्वास, लोक पर्व-उत्सव, लोकाचार एवं अंधविश्वास, खान-पान

इकाई 10: मेघालय की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय **175 - 187**
जनजातीय स्थिति, लोकविश्वास, लोक पर्व-उत्सव, लोकाचार एवं अंधविश्वास, खान-पान

इकाई 11: मिजोरम की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय **188 - 199**
जनजातीय स्थिति, लोकविश्वास, लोक पर्व-उत्सव, लोकाचार एवं अंधविश्वास, खान-पान

इकाई 12: मणिपुर की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय **200 - 215**
मणिपुर के मूल निवासी, मणिपुर की पारंपरिक वेशभूषा, खान-पान एवं जीवनशैली, पारंपरिक नृत्य, मणिपुर के उत्सव और पर्व, खेल-संस्कृति, भाषा और साहित्य, धार्मिक विश्वास

इकाई 13: नागालैंड की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय **216 - 233**
जनजातीय स्थिति, प्रमुख नागा जनजातियाँ, जनजातीय संरचना और कुल व्यवस्था, लोकविश्वास, लोक पर्व-उत्सव, लोकाचार एवं अंधविश्वास, खान-पान, समाज व्यवस्था

इकाई 14: त्रिपुरा की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय **234 - 255**
जनजातीय स्थिति, लोक-विश्वास, लोकाचार एवं अंधविश्वास, खान-पान, जनजातीय समाज की ज्ञान-परंपरा, समाज व्यवस्था

इकाई 15: सिक्किम की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय **256 - 271**
जातीय एवं जनजातीय स्थिति, प्रमुख जातीय समुदाय एवं जनजातियाँ, नेपाली: प्रमुख उपजातियाँ, लोकविश्वास, लोक पर्व-उत्सव, लोकाचार एवं अंधविश्वास, खान-पान, समाज व्यवस्था

विषय प्रवेश

आपके समक्ष कृष्णकांत हेन्डिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय के एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम के चतुर्थ सेमिस्टर का विशिष्ट वैकल्पिक पत्र **'लोक-संस्कृति (उत्तर-पूर्व के विशेष संदर्भ में)'** प्रस्तुत है। लोक-संस्कृति किसी भी समाज की सामूहिक चेतना, जीवन-दृष्टि, परंपराओं, विश्वासों, रीति-रिवाजों, लोकाचारों तथा सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति है। यह केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान सामाजिक जीवन की जीवंत परंपरा भी है। लोक-संस्कृति के माध्यम से किसी क्षेत्र विशेष के जनजीवन, उसकी ऐतिहासिक स्मृतियों, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक अस्मिता को समझा जा सकता है।

भारतीय संस्कृति की बहुरंगी परंपरा में लोक-संस्कृति का विशेष स्थान है। विशेष रूप से उत्तर-पूर्व भारत अपनी भाषाई, जातीय, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विविधता के कारण अत्यंत समृद्ध सांस्कृतिक क्षेत्र माना जाता है। यहाँ निवास करने वाली विभिन्न जनजातियों और समुदायों ने अपनी विशिष्ट लोक-परंपराओं, लोकविश्वासों, पर्व-उत्सवों, लोककलाओं, लोकगीतों, नृत्यों तथा जीवन-पद्धतियों के माध्यम से एक बहुआयामी सांस्कृतिक संसार का निर्माण किया है। असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम जैसे राज्यों की लोक-संस्कृतियाँ अपनी विशिष्टताओं के साथ भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाती हैं।

इस पत्र में लोक-संस्कृति की अवधारणा, स्वरूप, महत्त्व, परंपरा एवं विस्तार का अध्ययन किया गया है। साथ ही लोक-मानस, लोकवार्ता, लोक साहित्य तथा लोक-संस्कृति के विभिन्न रूपों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त उत्तर-पूर्व भारत के विभिन्न राज्यों की लोक-सांस्कृतिक परंपराओं, जनजातीय जीवन, लोकविश्वासों, लोकाचारों, पर्व-उत्सवों, खान-पान, समाज व्यवस्था तथा सांस्कृतिक मूल्यों का विस्तृत परिचय भी इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित है।

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन का महत्त्व बहुआयामी है। प्रथम, यह विद्यार्थियों को लोक-संस्कृति की सैद्धान्तिक अवधारणाओं तथा उसके सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व की सम्यक् समझ प्रदान करता है। द्वितीय, उत्तर-पूर्व भारत की विविध लोक-सांस्कृतिक परंपराओं के अध्ययन से क्षेत्रीय संस्कृति के प्रति संवेदनशीलता तथा तुलनात्मक दृष्टि का विकास होता है। तृतीय, लोक-संस्कृति के माध्यम से विद्यार्थी समाज, इतिहास, परंपरा और सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को गहराई से समझने में सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त यह पाठ्यक्रम सांस्कृतिक अध्ययन, लोक साहित्य, जनजातीय जीवन तथा भारतीय सांस्कृतिक बहुलता के प्रति शोधपरक दृष्टिकोण विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

लोक-संस्कृति का यह अध्ययन विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के विविध आयामों से परिचित कराने के साथ-साथ उत्तर-पूर्व भारत की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को समझने का अवसर प्रदान करता है। यह पत्र लोक-परंपराओं के संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत के मूल्यांकन तथा समकालीन समाज में उनकी प्रासंगिकता को समझने की दृष्टि विकसित करता है। साथ ही प्रत्येक इकाई में 'महत्त्वपूर्ण बिंदु', 'प्रगति जाँच' तथा 'प्रगति विवरण' जैसे शीर्षक दिए गए हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी विषयवस्तु को व्यवस्थित रूप से समझने और इकाई-आधारित प्रश्नों का समाधान करने में सक्षम होंगे।

इकाई–1 : लोक-संस्कृति : अर्थ एवं परिभाषा

इस इकाई में लोक-संस्कृति की अवधारणा, उसके अर्थ, परिभाषा तथा स्वरूप का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। लोक-संस्कृति किसी समाज के सामान्य जनजीवन, उनकी परंपराओं, रीति-रिवाजों, विश्वासों, लोकाचारों, उत्सवों, लोककलाओं तथा जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति है। इस इकाई में विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रतिपादित लोक-संस्कृति की परिभाषाओं का विवेचन करते हुए उसके मूल तत्त्वों को स्पष्ट किया जाएगा। साथ ही लोक और संस्कृति की अवधारणाओं का पृथक् एवं संयुक्त रूप से अध्ययन कर लोक-संस्कृति के व्यापक स्वरूप को समझाया जाएगा। लोक-संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं, उसके सामाजिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व तथा समाज के निर्माण एवं विकास में उसकी भूमिका पर भी प्रकाश डाला जाएगा। इसके अतिरिक्त लोक-संस्कृति और शिष्ट संस्कृति के संबंध एवं भिन्नताओं का संक्षिप्त परिचय भी प्रस्तुत किया जाएगा।

इकाई के अंत में सारांश, प्रगति-विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानकारी हेतु संदर्भ सामग्री तथा अभ्यास-प्रश्न दिए गए हैं। इनके अध्ययन से विद्यार्थी लोक-संस्कृति की अवधारणा, उसके स्वरूप तथा भारतीय समाज और संस्कृति में उसके महत्त्व को सम्यक् रूप से समझ सकेंगे।

इकाई–2 : लोक और संस्कृति : अवधारणा

इस इकाई में 'लोक' तथा 'लोक-संस्कृति' की अवधारणा का परिचय दिया जाएगा। लोक शब्द के अर्थ, उसके स्वरूप तथा समाज में उसकी भूमिका पर विचार करते हुए लोक-संस्कृति के तात्पर्य को स्पष्ट किया जाएगा। साथ ही लोक-जीवन, परंपराओं, रीति-रिवाजों, विश्वासों एवं सांस्कृतिक मूल्यों के साथ लोक-संस्कृति के संबंध को समझाया जाएगा। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी लोक और लोक-संस्कृति की मूल अवधारणाओं, उनकी विशेषताओं तथा सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व से परिचित हो सकेंगे । इकाई में सम्मिलित विविध बिंदुओं को पढ़कर शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही सम्बंधित प्रश्नों का हल करने में सक्षम होंगे ।

इकाई–3 : समाज जीवन में लोक-संस्कृति का महत्त्व

इस इकाई में समाज जीवन में लोक-संस्कृति के महत्त्व, उसकी अवधारणा तथा आवश्यकता का अध्ययन किया जाएगा। लोक-संस्कृति किसी समाज की सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं, रीति-रिवाजों, लोकाचारों तथा जीवन-मूल्यों की संवाहक होती है। इस इकाई में सामाजिक एकता, सांस्कृतिक निरंतरता तथा सामुदायिक चेतना के विकास में लोक-संस्कृति की भूमिका पर प्रकाश डाला जाएगा। साथ ही आधुनिक परिवेश में लोक-संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता तथा समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास में उसके योगदान का विवेचन किया जाएगा। इस इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर छात्र न केवल विषय को गहराई से समझ पाएंगे, बल्कि उससे जुड़े हर प्रश्न का समाधान भी ढूंढ सकेंगे ।

इकाई–4 : लोक-संस्कृति का अध्ययन, परंपरा एवं विस्तार

इस इकाई में लोक-संस्कृति के अध्ययन, उसकी परंपराओं तथा विस्तार की प्रक्रिया का विवेचन किया जाएगा। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक लोक-संस्कृति के विकास, संरक्षण और प्रसार की विभिन्न अवस्थाओं का परिचय दिया जाएगा। लोक-जीवन से जुड़े रीति-रिवाजों, मान्यताओं, लोककथाओं, लोकगीतों तथा सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से लोक-संस्कृति की निरंतरता को समझाया जाएगा।

साथ ही यह भी स्पष्ट किया जाएगा कि समय, समाज और परिस्थितियों के परिवर्तन के बावजूद लोक-संस्कृति किस प्रकार अपनी मूल विशेषताओं को बनाए रखते हुए विकसित होती रही है। आधुनिक युग में लोक-संस्कृति के विस्तार के साधनों तथा उसके समक्ष उपस्थित चुनौतियों पर भी संक्षेप में विचार किया जाएगा। इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी लोक-संस्कृति की ऐतिहासिक यात्रा, उसके विकासक्रम तथा सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों को समझ सकेंगे। प्रस्तुत विषयवस्तु लोक-संस्कृति की परंपरा और उसके व्यापक स्वरूप के प्रति सम्यक् दृष्टि विकसित करने में सहायक होगी। अध्ययन को सुगम बनाने के लिए इकाई में सारांश, रूपरेखात्मक प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री तथा अभ्यास-प्रश्न भी सम्मिलित किए गए हैं।

इकाई–5 : लोक-मानस और लोक-संस्कृति की अभिव्यक्ति

इस इकाई में लोक-मानस और लोक-संस्कृति की अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों का अध्ययन किया जाएगा। संस्कार एवं धर्म, त्योहारों, कृषि एवं श्रम-परिहार, लोक-विश्वास तथा रसात्मक अनुभूतियों के माध्यम से लोक-संस्कृति की अभिव्यक्ति को समझाया जाएगा। साथ ही लोक-जीवन की भावनाओं, मान्यताओं और सांस्कृतिक चेतना के विविध आयामों पर प्रकाश डाला

जाएगा। इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थी लोक-मानस और लोक-संस्कृति के परस्पर संबंध को समझ सकेंगे। यह विषयवस्तु लोक-जीवन की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के विभिन्न स्वरूपों से परिचित कराएगी। इकाई में सारांश, रूपरेखात्मक प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री तथा अभ्यास-प्रश्न भी दिए गए हैं, जो विषय की समझ को सुदृढ़ बनाने में सहायक होंगे।

इकाई–6 : लोकसंस्कृति : लोकवार्ता का स्वरूप एवं अवधारणा

इस इकाई में लोकवार्ता की अवधारणा, स्वरूप, क्षेत्र एवं महत्त्व का अध्ययन किया जाएगा। लोकवार्ता और लोक साहित्य के संबंध, लोक साहित्य तथा शिष्ट साहित्य के अंतःसम्बन्ध तथा लोकवार्ता के प्रमुख तत्त्वों का परिचय दिया जाएगा। साथ ही लोक साहित्य और संस्कृति के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट करते हुए लोकजीवन में उनकी भूमिका पर विचार किया जाएगा। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी लोकवार्ता एवं लोक साहित्य की मूल अवधारणाओं को समझ सकेंगे। विषयवस्तु लोक-संस्कृति के विविध आयामों तथा उसके सांस्कृतिक महत्त्व से परिचित कराएगी। अध्ययन को सरल और उपयोगी बनाने के लिए इकाई में सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न सम्मिलित किए गए हैं।

इकाई–7 : लोक-संस्कृति के विभिन्न रूप

इस इकाई में लोक-संस्कृति के विविध रूपों तथा उससे जुड़े अभिन्न अंगों का परिचय दिया जाएगा। लोकगीत, लोककथा, लोकनृत्य, लोककला, रीति-रिवाज, परंपराएँ तथा लोकविश्वास जैसे विभिन्न स्वरूपों के माध्यम से लोक-संस्कृति की व्यापकता को समझाया जाएगा।इस इकाई का अध्ययन विद्यार्थियों को लोक-संस्कृति के विविध आयामों से परिचित कराएगा। साथ ही वे लोकजीवन में इन स्वरूपों की भूमिका और महत्त्व को समझ सकेंगे। विषय की समझ को सुदृढ़ बनाने हेतु सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न भी दिए गए हैं।

इकाई–8 : असमिया लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय

इस इकाई में संस्कृति की परिभाषा, संस्कृतियों के प्रकार तथा लोक-संस्कृति के वर्गीकरण का परिचय दिया जाएगा। साथ ही असम की लोक-सांस्कृतिक परंपराओं, उनकी प्रमुख विशेषताओं तथा समकालीन संदर्भों में असमिया लोक-संस्कृति की स्थिति पर विचार किया जाएगा। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी असम की समृद्ध लोक-सांस्कृतिक विरासत से परिचित होंगे। यह अध्ययन क्षेत्रीय संस्कृति के विविध पक्षों को समझने में सहायक होगा। इकाई में सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न भी सम्मिलित किए गए हैं।

इकाई–9 : अरुणाचली लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय

इस इकाई में अरुणाचल प्रदेश की जनजातीय स्थिति, लोकविश्वास, लोक पर्व-उत्सव, लोकाचार, अंधविश्वास तथा खान-पान संबंधी परंपराओं का अध्ययन किया जाएगा। इसके माध्यम से वहाँ के लोकजीवन एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का परिचय प्राप्त होगा। इस इकाई का अध्ययन विद्यार्थियों को अरुणाचल की लोक-सांस्कृतिक विविधता को समझने का अवसर प्रदान करेगा। साथ ही वे वहाँ की जनजातीय परंपराओं और जीवन-पद्धति से परिचित हो सकेंगे। अध्ययन की सुविधा के लिए इकाई में सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न दिए गए हैं।

इकाई–10 : मेघालय की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय

इस इकाई में मेघालय की जनजातीय स्थिति, लोकविश्वास, लोक पर्व-उत्सव, लोकाचार, अंधविश्वास तथा खान-पान संबंधी परंपराओं का अध्ययन किया जाएगा। इसके माध्यम से मेघालय के लोकजीवन एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का परिचय प्राप्त होगा।यह इकाई विद्यार्थियों को मेघालय की समृद्ध लोक-सांस्कृतिक विरासत को समझने में सहायता प्रदान करेगी। विषय की स्पष्ट समझ के लिए सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न भी दिए गए हैं।

इकाई–11 : मिजोरम की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय

इस इकाई में मिजोरम की जनजातीय स्थिति, लोकविश्वास, लोक पर्व-उत्सव, लोकाचार, अंधविश्वास तथा खान-पान संबंधी परंपराओं का परिचय दिया जाएगा। साथ ही वहाँ के लोकजीवन और सांस्कृतिक मूल्यों पर भी प्रकाश डाला जाएगा।इस अध्ययन से विद्यार्थी मिजोरम की लोक-संस्कृति के विविध पक्षों से परिचित होंगे। इकाई में सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न भी सम्मिलित किए गए हैं।

इकाई–12 : मणिपुर की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय

इस इकाई में मणिपुर के मूल निवासियों, पारंपरिक वेशभूषा, खान-पान, जीवनशैली, पारंपरिक नृत्यों, उत्सवों एवं पर्वों, खेल-संस्कृति, भाषा-साहित्य तथा धार्मिक विश्वासों का अध्ययन किया जाएगा। इसके माध्यम से मणिपुर की सांस्कृतिक पहचान और जीवन-पद्धति को समझाया जाएगा।यह इकाई विद्यार्थियों को मणिपुर की लोक-सांस्कृतिक परंपराओं एवं उनकी विशिष्टताओं से परिचित कराएगी। अध्ययन को उपयोगी बनाने के लिए सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न दिए गए हैं।

इकाई 13: नागालैंड की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय

इस इकाई में नागालैंड की जनजातीय स्थिति, प्रमुख नागा जनजातियाँ, जनजातीय संरचना एवं कुल-व्यवस्था, लोकविश्वास, लोक पर्व-उत्सव, लोकाचार, अंधविश्वास, खान-पान तथा समाज व्यवस्था का अध्ययन किया जाएगा। इससे नागालैंड के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का परिचय प्राप्त होगा। यह इकाई विद्यार्थियों को नागा समाज की सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं को समझने में सहायता करेगी। इकाई में सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न भी सम्मिलित हैं।

इकाई–14 : त्रिपुरा की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय

इस इकाई में त्रिपुरा की जनजातीय स्थिति, लोकविश्वास, लोकाचार, अंधविश्वास, खान-पान, जनजातीय समाज की ज्ञान-परंपरा तथा समाज व्यवस्था का परिचय दिया जाएगा। साथ ही वहाँ की सांस्कृतिक परंपराओं एवं सामाजिक संरचना पर भी विचार किया जाएगा।इस अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी त्रिपुरा की लोक-संस्कृति के विभिन्न आयामों से परिचित हो सकेंगे। विषय की बेहतर समझ के लिए सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न दिए गए हैं।

इकाई–15 : सिक्किम की लोक-संस्कृति का सामान्य परिचय

इस इकाई में सिक्किम की जातीय एवं जनजातीय स्थिति, प्रमुख जातीय समुदायों एवं जनजातियों, नेपाली उपजातियों, लोकविश्वासों, लोक पर्व-उत्सवों, लोकाचारों, अंधविश्वासों, खान-पान तथा समाज व्यवस्था का अध्ययन किया जाएगा। इसके माध्यम से सिक्किम की बहुआयामी लोक-सांस्कृतिक परंपराओं का परिचय प्राप्त होगा। यह इकाई विद्यार्थियों को सिक्किम की सांस्कृतिक विविधता एवं सामाजिक जीवन को समझने का अवसर प्रदान करेगी। अध्ययन को सुव्यवस्थित बनाने हेतु सारांश, प्रगति-विवरण, संदर्भ सामग्री एवं अभ्यास-प्रश्न भी दिए गए हैं।



This document was created with the Win2PDF “Print to PDF” printer available at

https://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.
Visit https://www.win2pdf.com/trial/ for a 30 day trial license.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

https://www.win2pdf.com/purchase/